ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

सौंदर्य-भावना के परिप्रेक्ष्य में जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन |

डॉ.जार्ज जोसफ

सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, क्राइस्ट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी),बेंगलुरु-29, कर्नाटक, भारत |

सारांश: *जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान दोनों सौंदर्य के कवि थे | इनकी सौंदर्य कल्पना में पार्थिव और अपार्थिव दोनों का महत्व है |दोनों एक ओर प्रकृति के रम्य एवं मनोहर सौंदर्य - से इन्द्रिय तृप्ति पता है तो दूसरी ओर उसे चेतन के रहस्य और पवित्रता का ज्ञान करनेवाली साधन के रूप में भी एहसास करते हैं | शस्वत आनंद प्राप्त करनेवाली पकृति स्वच्छन्दतावादी कवि के मानसिक आनंद का सहारा है और सामाजिक विषमता के कारण भ्रष्ट मानव को अपने चिरसौंदर्य दर्शन के द्वारा पवित्र और सुशील बनाती है |सौंदर्य भावना स्वच्छन्दतावादी काव्य की सहज वृत्ति है |सौंदर्य का आकर्षण अनोखा होता है, जिसका सम्बन्ध मनुष्य के भावात्मक संवेगों के साथ है | इस सौंदर्य तत्त्व के प्रति प्रसाद और आशान पर्याप्त सचेत दीख पड़ते हैं |उनके काव्यों में सौंदर्य के दोनों रूप - बाह्य सौंदर्य एवं अन्तः सौंदर्य भिन्न -भिन्न प्रकार से अनुभूति का विषय बन गए हैं |*

मूल शब्द: पार्थिव सौंदर्य, अपार्थिव सौंदर्य, स्वच्छन्दतावाद, वैयक्तिक अनुभूति, अभिव्यक्ति|

प्रस्तावना:

जयशंकर प्रसाद के काव्यों में सौंदर्य–भावना: जयशंकर प्रसाद के काव्य, मूल रूप से सौंदर्य और प्रेम के बीच में होकर प्रवाहित होनेवाली एक नदी के सामान हैं | प्रसाद अपनी सौंदर्य भावना को वैयक्तिक अनुभूति के सहारे निर्मित करते हैं और धीरे - धीरे वे प्रकृति में उसी सौंदर्य की खोज करते हुए उसे अधिक विस्तृत जगत में ले जाते हैं | प्रसाद ने अपने 'काव्य, कला तथा अन्य निबंध' नामक ग्रन्थ में, सौंदर्य पर विस्तृत चर्चा की हैं | उनके अनुसार सौंदर्य-बोध विश्वव्यापी है | सौंदर्य असीम सत्ता का ससीम रूप है | अपने निबंधों में उन्होंने सभ्यता और संस्कृति के साथ देशकाल तथा परिस्थितियों को सौंदर्य का मानदंड निश्चित करने में सहायक बताया है क्योंकि इससे एक विशेष प्रकार की रूचि का निर्माण होता है, जो सौन्दर्यानुभूति की तुला का कार्य करती है | प्रसाद संस्कृति की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि सस्कृति सौंदर्य-बोध के विकसित होने की मौलिक चेष्टा है |

प्रसाद ने सौंदर्य को व्यख्यायित करने के साथ ही सौंदर्य - बोध जैसे विषय पर भी लेखनी चलायी है | ये सौंदर्य - बोध केलिए प्रकृतिजन्य सौंदर्य को प्रमुख मानते हुए कहते हैं - "सौंदर्य - बोध, बिना रूप के हो ही नहीं सकता | सौंदर्य की अनुभूति के साथ ही साथ हम अपने संवेदन को आकार देने केलिए बाध्य हैं |"१

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

प्रसाद सौंदर्य को एक ईश्वरीय विभूति के रूप में स्वीकार करते हैं | क्योंकि उनके अनुसार सौंदर्य में सर्वदा 'चित' की साक्षात् दीप्ति रहती है | सौंदर्य में सर्वत्र 'चित' की दीप्ति रहने के कारण इन्हें सुंदरता के प्रत्येक निदर्शन में परम चित का दिव्य प्रभासंदोह पट भूमिका की ओट में दिखलाई पड़ता है -

"सौंदर्यमयी चंचल कृतियाँ बनकर रहस्य है नाच रही

मेरी आंखों को रोक वहीं आगे बढ़ने में जाँच रही |"२

सौंदर्य के सार्वभौम रूप को प्रसाद ने कामायनी के लज्जा सर्ग में इस प्रकार प्रस्तुत किया है- "उज्जवल वरदान चेतना का सौंदर्य जिसे सब कहते हैं

जिसमें अनंत अभिलाषा के सपने सब जगते रहते हैं |"३

प्रसाद के काव्यों में प्रमुख रूप से दो प्रकार केसौन्दर्य का चित्रण हुआ है |पहला मानव - सौन्दर्य दूसरा प्रकृति सौन्दर्य | स्थूल रूप से सौन्दर्य को दो भागों में विभक्त किया जाता है - बाह्य सौन्दर्य और अन्तः सौन्दर्य | कवियों द्वारा मानव के बाह्य और आतंरिक, दोनों सौन्दर्य रूपों को अभिव्यक्ति मिलती रही है परन्तु बाह्य सौन्दर्य रचनाकारों ने अधिक रस लेकर अभिव्यक्ति किया है | प्रसाद ने मानव के आतंरिक और बाह्य दोनों प्रकार के सौन्दर्य की सराहना की है | प्रसाद ने अपने काव्यों में नारी के बाह्य सौन्दर्य को अधिक रूपायित किया है | एक और उन्होंने प्रकृतिमूलक उपमानों के सहारे नारी के सौन्दर्य का सुन्दर एवं स्वस्थ चित्र प्रस्तुत किया है तो दूसरी ओर उनकी तूलिका से वैभव -विलास से सम्पृक्त मादक चित्र भी खींचे गये हैं |

'झरना' के 'रूप' शीर्षक गीति में कवि ने रूप-सौन्दर्य का चित्र खींचा है, जिसमें नायिका के शारीरिक सौन्दर्य का उपमामूलक ढांचा तैयार किया गया है -

"ये बंकिम भ्रू युगल, कुटिल कुंतल घने,

नील नलिन से नेत्र चपल माध से भरे," | ४

'कानन कुसुम' में प्रिय-वदन और नेत्रों के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए प्रसाद ने कहा है-

"नील नीरज नेत्र का तब तो मनोज्ञ विकास था

अंग-परिमल मधुर मारुत का महान विलास था |" ५

कवि ने नारी के शारीरिक सौन्दर्य के वर्णन में आतंरिक सौन्दर्य को भर दिया है | 'आँसू' में शारीरिक सौन्दर्य का अमांसल चित्रण मादक भंगिमा के साथ किया गया है -

"थी किस अनंग के धनु की,

वह शिथिल शिंजिनी दुहरी |

अलबेली बाहु-लता या ,

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

तनु छवि-सर की नव लहरी |"६

'लहर' की निम्न पंक्तियों में भी शारीरिक सौन्दर्य का अमांसल चित्रण प्रस्तुत किया है -

"अधरों में राग अमन्द पिये,

अलकों में मलयज बन्द किये -

तू अब तब साई है आली |

आँखों में भरे विहग री ! "७

'कामायनी' में कवि ने मनु का पौरुष निम्न प्रकार व्यक्त किया है -

"अवयव की दृढ़ मांस-पेशियाँ,

ऊर्जस्वित था वीर्य अपार;

स्फीत शिरायें, स्वस्थ रक्त का

होता था जिनमें संचार |"८

डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रसाद की सौन्दर्य भावना पर प्रकाश डालते हुए कहा है किप्रसाद के सामान सौन्दर्य के प्रेमी कवि बहुत ही विरल है और पार्थिव सौन्दर्य को स्वर्गीय महिमा से मंडित करके प्रकट करने का सामर्थ्य तो इतना और किसी में है ही नहीं |

मानव का प्रकृति से अटूट सम्बन्ध है | प्रत्येक युग के रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति सौन्दर्य को अत्यधिक स्थान दिया है | प्रसाद ने भी अपने काव्यों में प्रकृति के प्रायः सभी स्थानों का चित्रण किया है | उन्होंने आलम्बन, उद्दीपन और मानवीकरण के रूप में प्रकृति को रूपायित करने का स्वतः प्रदत्त दायित्व बखूबी निभाया है | 'झरना' में संध्या का सुन्दर चित्रण करते हुए अंधकार को अवसाद की कालिमा की वर्षा करने को उत्सुक रूप में प्रस्तुत किया है |'लहर' में प्रकृति का आलम्बन प्रस्तुत करके उसमें शशि के सुख एवं उसके निर्मल हास को प्रस्तुत किया गया है |'कामायनी' के इड़ा सर्ग में प्रकृति के सौन्दर्य को प्रस्तुत करते हुए कवि ने लिखा है -

"प्राची में फैला मधुर राग

जिसके मंडल में एक कमल खिल उठा सुनहला भर पराग |" ९

प्रसाद के काव्यों में प्रकृति के उद्दीपन रूप को प्रचुर स्थान नहीं मिला है | फिर भी 'झरना','लहर' आदि संकलनों में प्रकृति के उद्दीपन रूप का कुछ उदहारण पाया जाता है |प्रकृति के मानवीकरण द्वारा प्रसाद ने प्रकृति पर मानव के रूप में सौन्दर्य, गुन और मानव भावना आदि का आरोप किया है |

इस प्रकार हम देखते है कि प्रसाद ने प्रकृति के यथातथ्य रूप को अपनी खुली आँखों से देखा और उसे अपनी रचनाओं में उतारा | उन्होंने प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का चित्रण करते हुए उसे विश्व सुन्दरी की संज्ञा प्रदान की है | हिन्दी साहित्य ने सौन्दर्य की अभिव्यक्ति करनेवाला इतना बड़ा कवि अभी तक उत्पन्न नहीं किया है |

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

इन्होंने जिस सौन्दर्य की उपासना की है तथा जिसके साहचर्य केलिए आकुलता प्रकट की है वह साधारण सौन्दर्य नहीं है जिसे सभी प्राप्त कर लें | वह तो चेतना का उज्वल वरदान है और जिसे मिल जाता है उसे इस लोक में ही स्वर्ग का सा आनंद आने लगता है | प्रसाद केलिए सौन्दर्य -मात्र पार्थिव आकर्षण नहीं | वही उनके काव्य का मूल दर्शन है |

कुमारनाशान के काव्यों में सौंदर्य–भावना:

मलयालम स्वच्छन्दतावादी कवि कुमारनाशान के काव्यों में रूप सौन्दर्य की अपेक्षा भाव-सौंदर्य ही अधिक दिखाई देता है | कुमारनाशान ने वस्तु या व्यक्ति के बाह्य रूप पर उतना ध्यान नहीं दिया है | बल्कि ऐसे सौन्दर्य का उतना ही वर्णन किया है जितना कि भाव व्यंजना में अत्यंत अपेक्षित रहा है |उपयुक्त भाव-सौन्दर्य के सन्निवेश से आशान के पात्रों का अंतः सौन्दर्य परमकाव्य तक पहुँच गया है |

'वीणापूव' को भी असाधारण भाव व्यक्तित्व मिल गया है | जहाँ प्रसाद ने मानव के आतंरिक और बाह्य दोनों प्रकार के सौन्दर्य का वर्णन किया है वहाँ कुमारनाशान ने केवल मानव के आतंरिक सौन्दर्य का चित्रण किया है |

'वीणापूव' की निम्न लिखित पंक्तियाँ कवि के भाव-सौन्दर्य का स्पष्ट परिचायक है - "चेतोहरंगल समजातिकलाम सुमं

गलेतुम समानमज़ाकुल्लावायेन्किलूम नी |"१०

(भाव: मुझे तेरी ओर आकृष्ट करनेवाली कोई खास विशेषता (सौन्दर्य) तुझमें विद्यमान है जो दूसरों से सर्वथा भिन्न है |)

'नलिनी', 'लीला', 'चाण्डालभिक्षुकी' आदि काव्यों में नारी का बाह्य-सौन्दर्य-कल्पना कवि ने नहीं की है, मगर उनको उदात्त भाव संपन्न करने का प्रयास किया है –

"कूवि वायुविलकन्न तामर -

प्पूवेयांजु तटयुन्न हंसिपोल |" ११

(भाव: जिस प्रकार तेज़ हवा की झोंको से दूर हो रहे कमल को हंस रोकती है उसी प्रकार नलिनी दिवाकर के सम्मुख गिरती हुई उनके पैर पकड़ती है |)

x x x x x

"पषकिया तरुवल्ली माटीटॉम

पुषयोषुकुम वषि वेरियाक्किटॉम"| १२

(भाव: वृक्ष से लता अलग कर सकते हैं और नदी की धार अलग कर सकते हैं मगर कोई अच्छी स्त्री के मन में किसी पर अनुराग पैदा होने पर उसका मन बदलना कठिन है |)

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

'करुणा' में वासवदत्ता के बाह्य सौन्दर्य का वर्णन कवि ने किया है, लेकिन यहाँ भी कवि का वर्णन भावद्योतक बन गया है | वासवदत्ता का रूप-वर्णन यहाँ आवश्यक है क्योंकि वह एक वेश्या है, उसके बाह्य सौन्दर्य ने तो उसे रानी के पद पर प्रतिष्ठित किया | यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण बात है कि जब हाथ-पैर काट कर उसे श्मशान में भेज दिया गया | उस समय की उसकी विकृत रूप की भीषणता को गहराने केलिए भी उसका युवत्व -स्थिति का सौन्दर्य वर्णन आवश्यक था | लेकिन उपगुप्त ने तो उसके भाव व्यक्तित्व पर ही ध्यान केन्द्रित किया | 'करुणा' की निम्न पंक्तियों में कवि ने वासवदत्ता के बाह्य सौन्दर्य का सुन्दर चित्र खींचा है –

"कञ्जबाणन तंटे पट्टम केट्टीय राज्ञी पोलोरू

मञ्जुलांकि इरिक्कुन्नु मति मोहिनी |"१३

(भाव: वह सुंदरी कामदेव से अनुग्रहीत सौन्दर्य की रानी जैसी बैठती है |)

कुमारनाशान ने 'दुरवस्था' में सावित्री को एक समय आकाश में चमकता तारा कहा है | वह दुर्भाग्य से भूपतित हो गया -

" विंड़लतेनगो विलंगिया तारमे!

कुण्डिल पतिच्चु नी कष्ठ मोरताल ! "१४

कुमारनाशान ने प्रकृति को विभिन्न दृष्टियों से देखकर उसके सौन्दर्य का वर्णन अपने काव्यों में किया है | प्रकृति का आलम्बन रूप, उद्दीपन रूप एवं मानवीकरण के अनेक प्रसंग उनके काव्यों में पाये जाते हैं |

दोनों कवियों की सौन्दर्य भावना की तुलना:

दोनों कवियों की दृष्टि में सौन्दर्य ससीम को असीम तक पहुँचाने का मधुर मनोहर साधन है | अपनी स्वछन्द व स्वस्थ सौन्दर्य कल्पना के आधार पर एक ओर ये कवि हिन्दी व मलयालम के प्रेम काव्य को नीरस तथा रूढ़िगत बन्धनों से मुक्त करते हैं तो दूसरी ओर सौन्दर्य-बोध के नए आयामों के खुले प्रांगण का भी निर्माण करने में सफल हुए हैं | इनके काव्यों में नारी या पुरुष का बाह्य सौन्दर्य उनके अन्तः बाह्य सौन्दर्य का सहज उद्घाटन है | वैसे ही विश्व में व्याप्त प्रकृति की रमणीयता असीम रमणीय परम तत्व की पार्थिव छटा मात्र है | सौन्दर्य सम्बन्धी इनका चिन्तन दिव्य ईश्वरीय अनुभूतियों से अनुप्राणित है |

निष्कर्ष:

इस प्रकार सौन्दर्य भावना की दृष्टि से अध्ययन करें तो यह विदित होता है कि दोनों कवि सौन्दर्य भावना के उपासक थे | प्रसाद के काव्यों में व्यक्ति और वस्तु के आतंरिक एवं बाह्य सौन्दर्य को समान रूप से प्रधानता दी गयी है तो कुमारनाशान के काव्यों में आतंरिक सौन्दर्य या भाव सौन्दर्य को ही ज्यादात्तर महत्व दिया गया है | दोनों कवियों के काव्यों में प्रकृति सौन्दर्य का चित्रण समान रूप से अंकित किया गया है |

अंतटिप्पण(End Notes):

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

१. 'काव्य, कला तथा अन्य निबंध' - जयशंकर प्रसाद -पृ. ३५

२. 'कामायनी'- जयशंकर प्रसाद- पृ.४७६

३. 'कामायनी'- जयशंकर प्रसाद-पृ.५१२

४. 'झरना'- जयशंकर प्रसाद-पृ. २३८

५. 'कानन कुसुम'- जयशंकर प्रसाद-पृ.१६०

६. 'आँसू'- जयशंकर प्रसाद-पृ.३१०

७. 'लहर'- जयशंकर प्रसाद-पृ.३४५

८. 'कामायनी'- जयशंकर प्रसाद-पृ.४१४

९. 'कामायनी'- जयशंकर प्रसाद-पृ.५७

१०. 'कुमारानशानटे मौलिक कृतिकल'-वीणपूव-पृ.१९०

११. 'कुमारानशानटे मौलिक कृतिकल'-नलिनी-पृ.२३१

१२. 'कुमारानशानटे मौलिक कृतिकल'-लीला-पृ.२५१

१३. 'कुमारानशानटे मौलिक कृतिकल'-करुणा-पृ.५६८

१४. 'कुमारानशानटे मौलिक कृतिकल'-दुरवस्था-पृ.४६३

सन्दर्भ:

१. आधुनिक हिन्दी कविता की स्वछन्द धारा - त्रिभुवन सिंह

२. डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी -हिन्दी साहित्य

३. काव्य, कला तथा अन्य निबंध - जयशंकर प्रसाद

४. कुमारानशानटे मौलिक कृतिकल- कुमारनाशान

५. प्रसाद ग्रंथावली - भाग-१ -जयशंकर प्रसाद

६. आधुनिक हिन्दी तथा मलयालम काव्य - एन. ई. विश्वनाथअय्यर

७. छायावाद का सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन - डॉ.कुमार विमल

८. आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ - डॉ अजबसिंह

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021